पावसराग : ध्रुपद सन्ध्या

भारतीय संगीत की परंपरा में ऋतुओं का विशेष स्थान है, इसलिये विशेषतः वर्षा और वसन्त ऋतुओं में गाने-बजाने के लिये रागों की अपनी-अपनी शृंखलाएं हैं। 'पावस राग' शीर्षक से इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा सांस्कृतिक संस्था ज्ञान-प्रवाह के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रो० ऋत्विक् सान्याल के ध्रुपद गायन का आयोजन वर्षा ऋतु के नादमय स्वागत का प्रतीक रहा। इस कार्यक्रम का आयोजन वाराणसी की प्रतिष्ठित सांस्कृतिक संस्था 'ज्ञान-प्रवाह' में दिनाङ्क २९ जुलाई, २१०० को सम्पन्न हुआ। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के संगीत संकाय के पूर्व प्रमुख तथा डागर परम्परा के प्रतिनिधि गायक प्रो० ऋत्विक् सान्याल ने कार्यक्रम के प्रारम्भ में संगीतशास्त्र में उल्लिखित ध्रुवाओं की चर्चा की और राग देश में ध्रुवागान से अपना गायन आरंभ किया। उसके पश्चात् राग मियाँ मल्हार में आलापचारी और चौताल की बंदिश 'उमड़ घुमड़ गरज गरज बादल बरसन लागे' प्रस्तुत किया। गायन के बीच में रागदारी की सूक्ष्मता समझाते हुए गान्धार के प्रयोग में मल्हार और कान्हड़ा अंग का भेद और मल्हार में दोनों निषादों के प्रयोग की विशेषता को भी रेखांकित किया। ध्रुपद शैली के आलाप में उन्होंने मंगलार्थक पदों 'ऊँ अनन्त हरि नारायण' के साथ अक्षर विन्यास और शुष्काक्षर प्रयोग का छन्दोमय निदर्शन कराया और बताया कि वैखरी वाणी के साथ मध्यमा का प्रयोग किस प्रकार गायन में अधिक प्रभाव उत्पन्न करता है। गमक प्रयोग के समय स्वरस्थानों की शुद्धता की ओर ध्यान दिलाया और 'शारीरी वीणा' में केवल कंठ नहीं अपितु हृदय और नाभि स्थानों के भी यथोचित उपयोग का उदाहरण प्रस्तुत किया।

प्रो० सान्याल ने अगली प्रस्तुति में सूरदासी मल्हार में झपताल में सादरा 'साबीर के द्वारे फुहार' प्रस्तुत किया। कार्यक्रम को विस्तार देते हुए राग मेघ में चौताल की ओजपूर्ण बंदिश 'घोर घोर घोर घोर बरसत मेहरवा' गाकर श्रोतासमूह को तन्मय कर दिया। कार्यक्रम का समापन करते हुए सम्पूर्ण स्वरसृष्टि के आदिकारण नाद की स्तुति में अपनी रचना 'नाद प्रणव रूप सकल गुण निधान' प्रस्तुत की जिसे राग पटदीप और सूलताल में बाँधा था। प्रो० सान्याल के गायन में श्री श्रीकान्त मिश्र की पखावज संगति ने प्रस्तुति को और भी अधिक आनन्दमय बनाया तथा श्री विशाल जैन ने तानपूरे के सतत नाद सहित गायन में भी सहयोग किया।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, पूर्वक्षेत्रीय केन्द्र के परामर्शदाता प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी ने धन्यवाद देते हुए 'पावस राग' के इस आयोजन को कालिदास के मेघदूत में वर्णित 'पुष्कर' और 'आवर्तक' मेघों के आवाहन का अवसर बताया और इसे कलाकार के अन्तरपावस की बाह्य अभिव्यक्ति कहा। अमूर्त नाद द्वारा राग-मूर्ति की स्थापना की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि इस प्रस्तुति ने कला द्वारा बाह्य और आन्तर के सामरस्य के निदर्शन का महत्त्व उद्घाटित किया है।

कार्यक्रम का प्रारंभ गंगाकलश पूजन से हुआ। सभागत अतिथियों तथा कलाकारों का स्वागत इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के संयुक्त सचिव श्री वी० बी० प्यारेलाल एवं कलाकोश विभाग के अध्यक्ष डा० विजय शंकर शुक्ल ने किया तथा संचालन प्रो० कमल गिरि, संयुक्त निदेशक, ज्ञान-प्रवाह ने किया।

कार्यक्रम में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के संयुक्त सचिव श्री वी० बी० प्यारेलाल, कलाकोश विभाग के अध्यक्ष डा० विजय शंकर शुक्ल, श्री अशोक कपूर, प्रो नीलकंठ पुरुषोत्तम जोशी, श्रीमती विमला पोद्दार, प्रो० कृष्णकान्त शर्मा, प्रो० अवधेश प्रधान, डॉ० विश्वनाथ पाण्डेय सहित संगीत के मर्मज्ञ रसिक श्रोता उपस्थित थे।

समीक्षा प्रस्तुति – प्रो० कृष्णकान्त शर्मा
वैदिक दर्शन विभाग
संस्कृतविद्या धर्मविज्ञान सङ्काय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी ।